

## अध्याय 6. बस्तर की जनजाति संस्कृति:-

बस्तर जन-जातीय बाहुल्य अंचल हैं यहाँ आदिवासियों की बहुलता तो है ही, उनकी विविधता भी है और एक तरह से कहा जाए तो बस्तर जिला समाज शास्त्र, मानव शास्त्र, इतिहास और पुरातत्व के वैज्ञानिकों, के लिये स्वर्ग है। यहाँ इतनी प्रचुरता विविधता और बहुरंगी आयाम देखने को मिलती है अन्यत्र कहीं नहीं।"

### 6.1 बस्तर के प्रसिद्ध नृत्य:-

#### ककसाड़ नृत्य:-

ककसाड़ नृत्य या ककसार नृत्य छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले की मुड़िया और अबुझमाड़िया जनजाति के युवक-युवतियों द्वारा किया जाने वाला एक लोकनृत्य है। यह नृत्य, फसल और वर्षा के देवता 'ककसाड़' की पूजा के उपरान्त किया जाता है। इस नृत्य के साथ संगीत और घुँघरुओं की मधुर ध्वनि से एक रोमांचक वातावरण उत्पन्न होता है। इस नृत्य के माध्यम से युवक और युवतियों को अपना जीवनसाथी ढूँढने का अवसर प्राप्त होता है। यह एक मूलतः जात्रा नृत्य है इस लिए इसे जात्रा नृत्य भी कहते हैं। गाँव के धार्मिक स्थल पर मुरियाया जनजाति के लोग वर्ष में एक बार ककसाड़ यात्रा पर पूजा का आयोजन करते हैं। लिंगोपेन उनके प्रमुख देवता हैं जिनको प्रसन्न करने के लिए युवक और युवतियों अपनी साज-सज्जा करके सम्पूर्ण रात नृत्य-गायन करते हैं। पुरुष कमर में घंटी बाँधते हैं जबकि स्त्रियाँ सिर पर विभिन्न फूलों और मोतियों की मालाएं पहनती हैं।

ककसाड़ नृत्य एक धार्मिक नृत्य है जिसे करते समय नर्तक युवा अपने कमर में पीतल अथवा लोहे की घंटियाँ से बना कमरबंध, हिरनांग बांधे रहते हैं। इसके अलावा युवा अपने सिर पर पगड़ी, कलगी और कौड़ियों से श्रृंगार कर आकर्षक वेशभूषा में रहते हैं। मांदरी की ताल नृत्य को गति प्रदान करती है। युवतियाँ छोटे आकार के मजीरे (चिटकुल) बजाते हुए मांदरी की थाप के साथ संगत करते हुए नृत्य करती हैं।

#### डंडारी नृत्य:-

बस्तर के धुरवा जनजाति के द्वारा किये जाने वाला नृत्य है यह नृत्य त्यौहारों, बस्तर दशहरा एवं दंतेवाड़ा के फागुन मेले के अवसर पर देखने को मिलता है यह नृत्य बस्तर में विलुप्त होने की कगार पर है। दंतेवाड़ा के मारजूम चिकपाल के धुरवा जनजाति के ग्रामीणों ने आज भी इस डंडारी नृत्य को आने वाली पीढ़ी के लिये सहेज कर रखा है। यह नृत्य बहुत हद तक गुजरात के मशहूर डांडिया नृत्य से मेल खाता है।

डंडारी नृत्य में बांस की खपचियों से एक दुसरे से टकराकर ढोलक एवं तिरली के साथ जुगलबंदी कर नृत्य किया जाता है। तिरली बाँसुरी को कहा जाता है। यह नृत्य डांडिया नृत्य से अलग है, डांडिया में जहाँ गोल गोल साबूत छोटी छोटी लकड़ियों से नृत्य किया जाता है। इस नृत्य में नर्तकों के साथ वादक दल होता है। वादक दल में 7 से 8 व्यक्ति सिर्फ ढोल ही बजाते हैं, और केवल एक व्यक्ति तिरली वादन करता है।

बाँसुरी की धुन पर नर्तक बांस की खपचियों को टकराकर नृत्य करते हैं तिरली के स्वरों को साधने के लिये बहुत अनुभव की जरूरत होती है। तिरली वादक पीढ़ियों से ही तिरली बजाने की कला एक दुसरे को सिखाते आ रहे हैं।

## गौर माड़िया नृत्य :-

गौर माड़िया नृत्य छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर ज़िले में गौर माड़िया जनजाति द्वारा किया जाता है। इस जनजाति का यह नृत्य बहुत ही हर्षोल्लास से परिपूर्ण, सजीव एवं सशक्त होता है। यह नृत्य प्रायः विवाह आदि के अवसरों पर किया जाता है। इस नृत्य का नामकरण गौर भैंस के नाम पर हुआ है।

यह नृत्य एक प्रकार से शिकार नृत्य प्रतीत होता है, क्योंकि इसमें जानवरों की उछलने-कुदने आदि की चेष्टाओं को प्रदर्शित किया जाता है। फिर भी इस नृत्य में सधे हुए ताल के गहन धार्मिक और पवित्र भाव समाहित होते हैं। पुरुष नर्तक रंगीन और विशिष्ट शिरोवस्त्र धारण करते हैं, जिसमें भैंस की दो सींग और उन पर मोर का एक लम्बा पंख-गुच्छ और पक्षी के पंख लगे होते हैं। इसके किनारे पर कौड़ी की सीप से बनी झालर झूलती हैं, जिससे उनका चेहरा थोड़ा-सा ढँका रहता है। महिलाएँ पंखों की जड़ी हुई एक गोल चपटी टोपी पहनती हैं।

**नृत्य प्रक्रिया :-** नृत्य करने वाली नर्तकियाँ अपने साधारण सफ़ेद और लाल रंग के वस्त्र को सौन्दर्यमय बनाने के लिए अनेक प्रकार के आभूषणों को धारण करती हैं। एक आन्तरिक गोला बनाकर वे ज़मीन पर लय के साथ डंडे बजाती, पैर पटकती, झूमती, झुकती और घूमती हुई गोले में चक्कर लगाती रहती हैं। दूसरी ओर पुरुष नर्तक एक बड़ा बाहरी गोला बनाते हैं और तीव्र गति से अपने क़दम घुमाते और बदलते हुए जोर-जोर से ढोल पीटते हैं।

## गेंडी नृत्य:-

यह बस्तर की मुरिया जनजाति का एक विशेष नृत्य है। इसमें बांस की बनी गेंडी पर चढ़कर नृत्य किया जाता है। यह एक पुरुष प्रधान नृत्य है। इसमें दोनर्तक टिमकी बजाते हैं और उनको घेरकर 8-10 युवक या इससे भी अधिक गेंडी पर चढ़कर लय गति के साथ नृत्य करते हैं। इस नृत्य में कोई गीत नहीं गाया जाता है। गेंडी के बांसों के सहारे नर्तक कई तरह की आकर्षक और कठिन मुद्राएँ संयोजित करते हैं। यह पूरी तरह से संतुलन का नृत्य है। राह बस्तर की माड़िया जनजाति का अत्यन्त लोकप्रिय नृत्य है।

## 6.2 हस्तशिल्प (कला एवं संस्कृति) बस्तर :-

भारत के आदिवासी कलाओं में बस्तर की आदिवासी परंपरागत कला कौशल प्रशिद्ध है। जनजातीय कलाओं में प्रमुख बस्तर कला है जो भारत के बस्तर-क्षेत्र के आदिवासियों द्वारा प्रचलित है और अपने अद्वितीय कलाकृतियों के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। बस्तर के आदिवासी समुदाय अपनी इस दुर्लभ कला को पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित करते आ रहे हैं, परन्तु प्रचार के आभाव में यह केवल उनके कुटीरों से साप्ताहिक हाट बाजारों तक ही सीमित है। उनकी यह कला बिना किसी उत्कृष्ट मशीनों के उपयोग के रोजमर्रा के उपयोग में आने वाले उपक्रमों से ही बनाये जाते हैं। बस्तर के कला कौशल को मुख्य रूप से काष्ठ कला, बाँस कला, मृदा कला, धातु कला में विभाजित किया जा सकता है। काष्ठ कला में मुख्य रूप से लकड़ी के फर्नीचरों में बस्तर की संस्कृति, त्योहारों, जीव जंतुओं, देवी देवताओं की कलाकृति बनाना, देवी देवताओं की मूर्तियाँ, साज सज्जा की कलाकृतियाँ बनायी जाती है। बाँस कला में बाँस की शीखों से कुर्सियाँ, बैठक, टेबल, टोकरियाँ, चटाई, और घरेलु साज-सज्जा की सामग्रिया बनायी जाती है। मृदा कला में , देवी देवताओं की मूर्तियाँ, सजावटी बर्तन, फूलदान, गमले, और घरेलु साज-सज्जा की सामग्रियां बनायी जाती है। धातु कला में ताम्बे और टिन मिश्रित धातु के ढलाई किये हुए कलाकृतियाँ बनायी जाती है, जिसमे मुख्य रूप से देवी देवताओं की मूर्तियाँ, पूजा पात्र, जनजातीय संस्कृति की मूर्तियाँ, और घरेलु साज-सज्जा की सामग्रियां बनायी जाती है।

बस्तर जिला वनों से ढका हुआ है। यह भारत में उपस्थित जनजातिय समुदाय का बड़ा हिस्सा यहाँ निवासरत है। बस्तर शिल्प की दीवार दुनिया भर में कला उत्साही और ध्यान आकर्षित करते हैं। बस्तर कलाकृतियों आमतौर पर जनजातीय समुदाय की ग्रामीण जीवनशैली को दर्शाती है।

आदिवासी निश्चित रूप से भारत के पहली धातु स्मिथ थे और वे अभी भी प्राचीन अभ्यास के साथ जारी हैं। ये जनजातीय कलाकार धातु की पुरानी प्रक्रियाओं के माध्यम से, जीवन, प्रकृति और देवताओं के अनूठे दृश्य को लोहे में उकेरते हैं। उनकी प्रक्रिया सरल है – इसमें मूल रूप से धातु को फोर्जिंग और हथौड़ा द्वारा रूप देना है।

बस्तर अंचल के हस्तशिल्प, चाहे वे आदिवासी हस्तशिल्प हों या लोक हस्तशिल्प, दुनिया-भर के कलाप्रेमियों का ध्यान आकृष्ट करने में सक्षम रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि , इनमे इस आदिवासी बहुल अंचल की आदिम संस्कृति की सोंधी महक बसी रही है। यह शिल्प-परंपरा और उसकी तकनीक बहुत पुरानी है।

## 6.3 बस्तर के लोकगीत:-

### धार्मिक लोक गीत :-

धार्मिक लोकगीत को पेन पाटा कहा जाता है। पेन का अर्थ देवता है। इस प्रकार के गीतों में देवीदेवताओं का वर्णन, होता है। पेन पाटा में चार प्रकार के गीत होते हैं। पहला है

### ककसाड़ पाटा:-

यह गीत रात भर गाया जाता है। इसमें नृत्य भी शामिल है। मंडप के पास आने वाले सभी देवताओं के नाम लेकर इसे गाती है। और गाने के दौरान सवाल किया जाता है 'तुम कौन हो?'

### मातल पाटा:-

इस प्रकार के गीत देवताओं खेल-खिलाने के उद्देश्य से इसे गाया जाता है। इस प्रकार के गीतों में देवीओं को खेलने का अनुरोध किया जाता है।

### ढोलपाटा:-

ढोलबजा कर इसे गा कर देवताओं से खेलने का अनुरोध किया जाता है। घोटुल या गांव के लड़के ढोल बजाते हुए महिलाओं के बीच जाते हैं। उस वक्त नृत्य कर रहीं महिलाएं ढोलपाटा गीत गाती हैं।

### कोकरेंग पाटा:-

इसमें देवताओं का आवहान कर उनका परिचय कराया जाता है। गाने के दौरान ये बताया जाता है कि देवता किस परगने से संबंध रखता है। उसने कौन कौन से अलौकिक कार्य किए हैं।

### संस्कार गीत:-

सम या विषम गोत्रिय महिलाएं दो समूह में बंटकर यह गीत गाती हैं। इस प्रकार के गीतों हास्य प्रहसन का दौर चलता है। इसकी गायन प्रकृति के हिसाब से तीन श्रेणियों में बाँटा गया है। जन्म, विवाह और मृत्यु के समय गाए जाने वाले गीत। जन्म के समय जो गीत गाए जाते वे तीन प्रकार के होते हैं -

पुटुलपाटा, सटिंगपाटा और जाला पाटा कहा जाता है।

पुटुलपाटा यानि शिशु गीत। यह शिशु के जन्म के दिन ही महिलाएं गाती हैं। इसमें नवजात की माँ के परिवार और पिता के परिवार की महिलाएं मिलजुल कर समूह बनाकर गाती हैं।

सटिंग पाटा यानि नामकरण गीत यह छठी के दौरान गाया जाने वाला गीत है। इसमें गाँव की महिलाओं को आमंत्रित किया जाता है

। और वे समूह के रूप में जमा होकर ये गीत गाती हैं जिसे सटिंग यानि नामकरण (बस्तर में छटी ) कहते हैं  
जोली पाटा यानि लोरी गीत जब शिशु झूले में होता है तो यह गीत गाया जाता है। यह एक तरह से लोरी होता है जिसे घर की महिलाएं, माँ या दादी गाती है।  
जोला पाटा यानि झूलना गीत यह गीत घर की महिलाएं गाती है जब शिशु झूले में होता है।

### **विवाह संस्कार गीत:-**

गीत-संगीत हास्य प्रहसन की बड़ी भूमिका होती है। इसमें जो गीत गाए जाते हैं वे इस प्रकार होते हैं।

### **मरमिंग पाटा :-**

यानि शादी में गाए जाने वाले लोकगीत है। पहले सगाई गीत होता है और यही मरमिंग पाटा कहलाता है।  
जब वर पक्ष को भावी वधु की जानकारी मिलती है तो वर पक्ष शराब लेकर कई बार वधु के यहाँ जाते हैं आजकल यह नियम तीन बार कर दिया गया है। शराब लेकर जाने की रस्म को माहला कहा जाता है। माहला के दौरान जमा हुए महिला पुरुष माहला पाटा यानि सगाई गीत गाते हैं।

### **मांडो पाटा :-**

मंडापाच्छदन के दौरान गाया जाने वाला गीत। विवाह के लिए तैयार मंडप के बीचो-बीच महुआ की डाल जंगल से लाया जाता है। इसी दौरान गाना गाते हुए महिलाएं जाती है जिसे मांडो पाटा यानि मंडापाच्छदन गीत कहा जाता है।

### **टूकचोड़ी पाटा :-**

यानि चूनमाटी ये मजाक के लहजे में गाया जाने वाला गीत है। विवाह की रस्म के लिए गोठान से मिट्टी लाने के दौरान इस गीत को गाया जाता है।

### **करसामांडिल पाटा :-**

यह गीत कलश स्थापना के दौरान गाया जाता है। इसमें विवाह के निर्विघ्न सम्पन्न कराने के लिए देवताओं का आवाहन किया जाता है।

### **ऐर मिहान पाटा :-**

यानि पानी डालने के लिए गाया जाने वाला गीत। मंडप में दुल्हा दुल्हन को चटाई पर बिठाकर उनके ऊपर पानी डाला जाता है और देवताओं से आवाहन किया जाता है कि वे इस विवाह की साक्षी बनें।

### **नी तरहीना पाटा :-**

बस्तर में विवाह की एक रस्म होती है जिसे तेल चढ़ाना कहते हैं। इस रस्म में गाया जाने वाले गीत को नी तरहीना पाटा कहा जाता है।

### **जोड़ा पाटा:-**

आदिवासी समाज में विवाह का पूरा खर्च वर पक्ष को ही उठाना पड़ता है। वर पक्ष को विवाह सामग्री सौपते समय जो गीत गाया जाता है उसे जोड़ापाटा कहते हैं।

### **ऐरमिहना पाटा:-**

विवाह के दौरान पुजारी वर-वधु पर पानी डालता है और दोनों पक्षों के लोग नृत्य करते हुए यह गीत गाते हैं जिसे ऐरमिहना पाटा कहते हैं।

### **लगीड़पाटा:-**

विवाह के समय लड़के-लड़कियां वर-वधु को कलश की परिक्रमा कराते यह लगीड़पाटा गीत गाते हैं।

### **होपे कियान पाटा :-**

यानि दुल्हन की विदाई का गीत दुल्हन की की विदाई के लिए उसे भावी जीवन की सीख देते हुए यह गीत गाया जाता है। आजकल फिल्मों में दुल्हन की विदाई के दौरान कई गीत बनाए गए हैं। जिसे खूबसूरती से फिल्माया गया है। बस्तर में इस प्रकार के गीत को होपे कियान पाटा कहा जाता है। होपे कियान पाटा साड़ सौपने का गीत परिपाटा यानि समधि के सम्मान गाया जाने वाला गीत भी विवाह गीतों में आते हैं।

## 6.4 बस्तर के प्रसिद्ध खान पान

### त्योहारों के अनुसार व्यंजन

हरेली - गुरहा चिला  
पोला – ठेठरी  
कार्तिक एकादशी फरा  
अगहन व्रत चौसेला  
छेरछेरा – पूरी  
विवाह व अन्य अवसरों पर सोहारी  
होली – गुजिया  
पीतर – बरा  
शरद पूर्णिमा - तसमई

### (1) चावल से निर्मित

मीठा में देहरौरी, अइरसा, खीर (तसमई), पीड़िया (प्रसाद)  
नमकीन - चौसेला, मुरकू, चिला (छत्तीसगढ़ी दोसा)  
भाप से पका हुआ फरा, मुठिया, हड़फोड़वा

### (2) गेहूं से निर्मित

मीठा- खुरमी, बोबरा, गुलगुला  
बड़े आकार की पूड़ी सोहारी

### (3) चावल व गेहूं से निर्मित

मीठा व्यंजन पपची, खुरमी

### (4) बेसन से निर्मित

नमकीन ठेठरी, करी, भजिया, घाटी

### (5) दूध व चावल से निर्मित

मीठा व्यंजन - दूधफरा, तसमई (खीर)

## 6.5 बस्तर के प्रसिद्ध वेशभूषा

- (1) गला में सुतिया, सुता, सूर्रा, दुलरी, तिलरी, पुतरी, हंसली, ढोलकी, कलदार, सकरी
- (2) नाक खेनवा, बुलाक, बेसट लवंगफूल, नथ, नथनी, फुल्ली
- (3) कान में ढार, खिनवा, तरकी, लरकी, तितरी, लवंग, खोटिला, करनफूल
- (4) बाह में बाजूबंद, बहुटा, पहुंची, नागमोरी, बनुरिया, हरईया
- (5) पैर में बिछीया, पैरी, सांटी, लच्छा, टोडा, कटहर
- (6) कलाई में ऐंठी, चूरी, कंकनी, पटा, बनवरिया
- (7) सिर में मांगमोती, पटिया, बेनी, ककई, कंघी
- (8) कमर में करधन, करधनी (चांदी)

**बाजू में:-** बहुंटा साप के जैसा घुमा हुआ, बाजूबंद, नागमोरी प्लेन होता है,

**कलाई में:-** बनूरिया - कांटेदार, गुजरी - प्लेन, पटा, अइंठी दो धागेदार घुमा हुआ,

**उंगली में:-** मुंदरी

**गले में:-** सुता चांदी का, सूर्रा - लाख का, पुतरी सिक्के का

**पैर में:-** टोडा या साटी मोटा सा, पड़री,



## संदर्भ ग्रंथ सूची:-

अतुलनीय छत्तीसगढ़ - लेखक: पलाश सुरजन एवं सरिका ठाकुर

छत्तीसगढ़ की जनजातियों का सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास- लेखक: बन्सो नुरुटी

छत्तीसगढ़ का गौरवशाली इतिहास- लेखक: हेमू यदू

### छत्तीसगढ़ में आदिवासी आंदोलन -

#### शोध पत्रिका

जनजातीय संस्कृति-लेखक: निवेदिता वर्मा

छत्तीसगढ़ की बागनी अनिबानी के छत्तीसगढ़-लेखक: अरविंद मिश्रा

### छत्तीसगढ़ के वशिष्ठ अध्यय-

लेखक: हरिराम पटेल

### छत्तीसगढ़ का स्थापत्य कला-

लेखक: डॉ. कामता प्रसाद वर्मा

संपादक:- संचनालय संस्कृति एवं पुरातत्व छत्तीसगढ़ शासन 2014

### छत्तीसगढ़ पर्यटन विशेषांक-

#### शोध उपक्रम

संपादक:-डॉ कुमार बेहार, श्रीमती निर्मला बेहार

## बस्तर अंचल के स्मारक

क्र.	स्मारक	ग्राम	तहसील	जिला	काल
1.	प्राचीन ईंटों के मंदिर	गढ़धनोरा	केसकाल	कोण्डागाँव	5 वीं शताब्दी ई.
2.	बौद्ध चैत्य एवं शिव मंदिर	भोगापाल	कोण्डागर्गीव	कोण्डागाँव	छवी शताब्दी ई.
3.	चन्द्रादित्येश्वर मंदिर	बारसूर	गीदम	दन्तेवाड़ा	1060 ई.
4.	मामाभांजा मंदिर	बारसूर	गीदम	दन्तेवाड़ा	1070ई.
5.	बत्तीसा मंदिर	बारसूर	गीदम	दन्तेवाड़ा	1109 ई.
6.	गणेश मंदिर	बारसूर	गीदम	दन्तेवाड़ा	1120ई.
7.	शिव मंदिर	समलूर	भैरमगढ़	दन्तेवाड़ा	1120ई.
8.	शिव मंदिर	सिंधईगुड़ी	बस्तर	बस्तर	लगभग 12वी. शती ई.
9.	विष्णु मंदिर	नारायणपाल	बस्तर	बस्तर	1111 ई.
10.	शिवमंदिर	ढोंडरेपाल	बस्तर	बस्तर	लगभग 12वी. शती ई.
11.	शिव मंदिर	बस्तर	बस्तर	बस्तर	लगभग 12वीं-13वीं शती ई.
12.	शिव मंदिर	गुमड़पाल	बस्तर	बस्तर लगभग	13वीं शती ई.
13.	शिव मंदिर	देवखूंट	नगरी	धमतरी	लगभग 12वीं शती ई.
14.	कर्णेश्वर मंदिर समूह	सिहावा	नगरी	धमतरी	11 92वीं शती ई.
15.	प्राचीन टीले	बड़े ओड़ागाँव	कोण्डागाँव	कोण्डागाँव	5 – 6वी.
16.	प्राचीन टीले	मुलमुला	कोण्डागाँव	बस्तर	5-6वी.
17.	प्राचीन टीले	पाथरी	जगदलपुर	बस्तर	6 – 7वी.
18.	प्राचीन टीला	उड़का डोंगरी	कोण्डागाँव	बस्तर	6-7वी.
19.	प्राचीन टीला	अल्नेर	कोण्डागाँव	बस्तर	6-7वी.
20.	प्राचीन मंदिर	गढ़िया	जगदलपुर	बस्तर	11वीं शती ई.
21.	कामेश्वर मंदिर	कुरुसपाल	जगदलपुर	बस्तर	11वी. शती ई.
22.	शिव मंदिर	सिंगनपुर	जगदलपुर	बस्तर	12वी शती ई.
23.	रुदेश्वर शिव मंदिर	नारायणपाल	जगदलपुर	बस्तर	12वीं शती ई.
24.	शिव मंदिर	जांगला	बीजापुर	बीजापुर	12-13वीं शती ई
25.	शिव मंदिर	फंदीवाया	भोपालपटनम	बीजापुर	13-14वीं शती ई.
26.	प्राचीन गुफा	पोषणपल्ली	भोपालपटनम	बीजापुर	13 - 14 वीं शती ई.
27.	प्राचीन ध्वंशावशेष	भैरमगढ़	बीजापुर	बीजापुर	13वीं शती ई.
28.	शिव मंदिर	देवीनवागाँव	नरहरपुर	कांकेर	12-13वीं शती ई.
29.	शिव मंदिर	देवडोंगर	नरहरपुर	कांकेर	12-13 वीं शती ई
30.	प्राचीन मंदिर	रिसावाड़ा	नरहरपुर	कांकेर	12-13वीं शती ई.

## आभार:-

मानव जीवन किसी नवीन कार्यो को मूर्त रूप देने के लिए अनजाने पद की ओर कदम रखता है तब निरंतर अग्रसर होने के लिए सहयोग प्रेरणा उत्साह एवं मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है तब वह अपने निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होता है।

मैं अपने प्रोजेक्ट वर्क के निर्देशक डॉ.सरिता दुबे मैम का हृदय से आभारी हूं जिन्होंने अध्ययन के प्रत्येक चरण में समय-समय पर होने वाले कठिनाइयों के निवारण हेतु अपना अमूल्य समय प्रदान किया।

मैं अपने शिक्षक डॉक्टर महेंद्र कुमार शर्मा सर का भी आभार करती हूं जिन्होंने मुझे हमेशा पॉजिटिव रहने व अपने कार्य को पूर्ण करने की सलाह दी है।

मैं अपने शिक्षक डॉ. नितिन पांडे सर का आभार करती हूं जिन्होंने सदैव मुझे नवीन कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया।

मैं अपने विभाग अध्यक्ष डॉ. शंपा चौबे मैम का आभार व्यक्त करती हूं जिनका आशीर्वाद सदैव हमारे ऊपर बना रहा है जिनके आश्वासन से हमें सदैव नवीन कार्य करने की प्रेरणा प्राप्त होती रही है।

आदरणीय प्राचार्य डॉ. किरण गजपाल मैम का धन्यवाद करती हूं जिनके सहयोग हमें हमेशा प्राप्त होता है।

इसके साथ ही मैं अपने माता-पिता वह अपने सभी साथी का भी धन्यवाद करती हूं मैं अपने भगवान अपने प्रभु को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मेरे पोस्ट ग्रेजुएशन के सफर को इतना सुंदर बनाया।

## **-:अध्यायिकरण:-**

### **अध्याय 1:-छत्तीसगढ़ का सामान्य परिचय**

- 1.1 बस्तर का सामान्य परिचय**
- 1.2 बस्तर रियासत का नामकरण**
- 1.3 बस्तर का भौगोलिक परिवेश**

### **अध्याय 2:- बस्तर का प्राकृतिक सौंदर्य**

- 2.1 बस्तर के राष्ट्रीय उद्यान**
- 2.2 बस्तर के प्रसिद्ध गुफाएं**
- 2.3 बस्तर के प्रसिद्ध जलप्रपात**
- 2.4 बस्तर की प्रसिद्ध झील**
- 2.5 विच नॉर्थ हिल्स स्टेशन**
- 2.6 बस्तर के प्रसिद्ध अभ्यारण**

### **अध्याय 3:-बस्तर के प्रसिद्ध राजवंश**

- 3.1 छत्तीसगढ़ में जनजातीय विद्रोह बस्तर के संदर्भ में**
- 3.2 बस्तर का प्रसिद्ध राजमहल**

### **अध्याय 4:-बस्तर का ऐतिहासिक वैभव एवं स्थल**

### **अध्याय 5:-बस्तर का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल**

- 5.1 बस्तर के प्रसिद्ध मंदिर**
- 5.2 बस्तर का दशहरा**

### **अध्याय 6:- बस्तर की जनजातीय संस्कृति**

- 6.1 बस्तर के प्रसिद्ध नृत्य**
- 6.2 हस्तशिल्प (कला एवं संस्कृति) बस्तर**
- 6.3 बस्तर के प्रसिद्ध गीत**
- 6.4 बस्तर के प्रसिद्ध खानपान**
- 6.5 बस्तर के प्रसिद्ध वेश-भूषा**

